P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

ममता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
आगरा कॉलेज,
आगरा, भारत

सारांश

किसी भी देश की प्रगति के लिए अच्छे नागरिकों का होना आवश्यक है तथा यह कार्य उचित शिक्षा प्रणाली द्वारा ही सम्भव है। शिक्षकों के लिए यह समस्या खड़ी हो जाती है कि उचित शिक्षा किस आधार पर दी जाए। इसके लिए व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की रुचि, योग्यता, क्षमता, सृजनशीलता तथा शैक्षिक निष्पत्ति को जानना उचित होगा। विद्यार्थियों की निरन्तर विकसित होती योग्यताओं का मापन उनको प्रगति देने के लिए आवश्यक हो जाता है। यह छात्राओं की किसी क्षेत्र में उनके ज्ञान की सीमा है जो सामान्यतः पाठ्यक्रम के किसी भी विषय में अर्जित ज्ञान का लेखा–जोखा होता है। प्रस्तुत अध्ययन एक तुलनात्मक अध्ययन है जिसका मुख्य उद्देश्य स्नातक स्तर के विभिन्न संकायों की छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण करके परिणाम ज्ञात किये गये तथा निष्कर्ष रूप में पाया गया कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द : अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी, शैक्षिक निष्पत्ति एवं स्नातक स्तर की छात्राएं।

प्रस्तावना

इस संसार में व्यक्तिगत भिन्नताओं का पाया जाना मानव जाति की प्रमुख विशेषता है। सम्पूर्ण मानव समाज एक–दूसरे से भिन्न है तथा प्रत्येक व्यक्ति की अपनी कुछ विशेषताएं होती हैं। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। कोई व्यक्ति जैसा व्यवहार करेगा वैसा ही उसका व्यक्तित्व प्रकट होगा। प्रत्येक समाज तथा विद्यालय बालकों के व्यक्तित्व के विकास में रुचि लेता है। अतः विद्यालय की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का समुचित विकास करना ही है।

प्रत्येक बालक का व्यक्तित्व अपने आप में कुछ न कुछ निरालापन लिये होता है। जैसा उसके व्यक्तित्व का प्रकार होगा उसी के अनुसार उसका विकास भी होना चाहिए। वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर ही व्यक्तित्व के अनेक रूप दृष्टिगोचर होते हैं। जिनका वर्गीकरण विभिन्न वैज्ञानिकों एवं मनोवैज्ञानिकों ने विचारों के आधार पर, किसी ने शारीरिक रचना के आधार पर, किसी ने व्यक्ति की क्रियाओं के आधार पर, तो किसी ने भावनाओं के आधार पर किया है। सर्वाधिक सरल व्यक्तित्व का वर्गीकरण जुंग महोदय ने सामाजिकता के आधार पर प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार समाज में मुख्य रूप से दो प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति पाये जाते हैं –अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी।

अन्तर्मुखी

अन्तर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति संकोची, अपने कष्टों के प्रति सचेत, दूसरे के दुख में भाग न लेने वाले, दिवास्वप्न देखने वाले, स्वार्थी प्रवृत्ति, सामाजिक व्यवहार से अनभिज्ञ होते है। अन्तर्मुखी व्यक्तियों में आत्मकेन्द्रित, चिन्तनशील, लज्जा, निराशावादी तथा स्थिर चित्त जैसी प्रमुख विशेषतायें होती हैं।

बहिर्मुखी

बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक, व्यवहारशील, अवसरवादी, आत्मविश्वासी, लोकप्रिय, तर्कप्रधान, हँसमुख तथा नेतृत्व आकांक्षी होते हैं तथा ये आशावान व स्थिर चित्त वाले होते हैं। ये सामाजिक कार्यों में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने वाले, खेल में रुचि रखने वाले, अनियंन्त्रित एवं अपने कष्टों के प्रति सचेत न रहने वाले तथा परोपकारी स्वभाव के होते हैं। युंग महोदय को अपने अध्ययन काल

में कुछ ऐसे भी व्यक्ति दृष्टिगोचर हुए जो न तो पूर्णतया अन्तर्मुखी थे और न ही पूर्णतया बहिर्मुखी बल्कि दोनों प्रकार के गुण उन व्यक्तियों के व्यक्तित्व में विद्यमान थे। अतः उन्होनें यह निष्कर्ष निकाला कि कुछ व्यक्ति उभयमुखी भी होते हैं। जिनमें अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी दोनों प्रकार के व्यक्तित्व के गुण विद्यमान होते हैं।

शैक्षिक निष्पत्ति विद्यार्थियों की निरन्तर विकसित होती योग्यताओं का मापन उनको प्रगति देने के लिए आवश्यक हो जाता है। यह बालक की वर्तमान अथवा किसी विषय के क्षेत्र में उनके ज्ञान की सीमा है जो सामान्यतः पाठ्यक्रम के किसी भी विषय में अर्जित ज्ञान का लेखा–जोखा होता है। छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति ज्ञात कर लेने से उनकी अन्य विशेषताओं का भी पता लगाया जा सकता है कि वे किस क्षेत्र में अधिक क्रियाशील हैं। उन्हें उसी क्षेत्र में निर्देशन देकर उनकी मौलिक प्रतिभा को उजागर किया जा सकता है।

साधारण रुप से निष्पत्ति का अर्थ किसी निश्चित कार्य क्षेत्र में अर्जित किये गये ज्ञान का मापन करना है। इसके अन्तर्गत यह देखा जाता है कि अपनी बुद्धि के अनुसार विद्यार्थी किसी विषय का कहां तक अध्ययन कर सका है।

ड्रायलर के अनुसार, "अधिक व विशिष्ट रूप से कहा जा सकता है कि शैक्षिक योग्यता अपनी शैक्षिक परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का समग्र योग होता है।"

फीमैन के अनुसार, "एक शैक्षणिक निष्पत्ति परीक्षण वह है जिसका निर्माण ज्ञान समूह में कौशल के मापन के लिये किया जाता है।"

प्रस्तुत अध्ययन में निष्पत्ति से तात्पर्य कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं सामाजिक विज्ञान में पढ़ने वाली स्नातक स्तर की छात्राओं की प्रथम वर्ष में प्राप्त कुल अंक एवं श्रेणी से है।

सलीन बिनती रबाई *(2014)* ने टेक्नोलोजी एवं वोकेशनल ऐजुकेशन के शिक्षक प्रशिक्षुक विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति पर व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि व्यक्तिव एवं शैक्षिक निष्पत्ति में नकारात्मक सम्बन्ध है। परिणामस्वरूप व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी शैक्षिक सफलताओं को प्रभावित करता है।

ए. एस. अरूल लॉरेन्स एवं ए. जॉन लॉरेन्स *(2014)* ने सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रकार एवं शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन किया तथा पाया कि व्यक्तित्व के प्रकार एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

फहद राधी अल हरबी *(2017)* ने शैक्षिक सम्प्राप्ति पर अन्तर्मुखता का प्रभाव एक क्रास–अनुभागीय अध्ययन किया जिससे प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि (अन्तर्मुखता एवं बहिर्मुखता) व्यक्तित्व के प्रकारों एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

ऑगस्टीन एडजेई एवं अन्य *(2018)* ने आफिनसों कॉलेज ऑफ एजुकेशन के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी शिक्षक प्रशिक्षुओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी शिक्षक प्रशिक्षुओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अनुप्रयोग रूप में कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व के दोनों प्रकारों में से कोई भी प्रकार शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित नहीं करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर की छात्राओं को अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी में वर्गीकृत करना।
2. अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी स्नातक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तुत विषय पर शोधकर्त्री द्वारा आगरा शहर स्थित आर.बी.एस. कालेज आगरा की चार संकायों से स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत प्रथम वर्ष की 100 छात्राओं का चयन किया गया। प्रत्येक संकाय से 25–25 छात्राओं को लिया गया।

उपकरण चयन

1. पी. एफ. अजीज एवं रेखा अग्निहोत्री का अन्तर्मुखी बहिर्मुखी सूची परीक्षण।
2. शैक्षिक निष्पत्ति ज्ञात करने के लिए छात्राओं की स्नातक कक्षा की प्रथम वर्ष की अंक तालिका।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी टेस्ट

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्राओं को अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी में वर्गीकृत करने के पश्चात अन्तर्मुखी बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति जानने हेतु शैक्षिक निष्पत्ति, प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी अनुपात की गणना की गयी जिनको निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी अनुपात मान

समूह	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
अन्तर्मुखी	28	66.2	4.73	.0123	>.05
बहिर्मुखी	21	66.23	5.72		

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर नहीं है। दोनों समूहों का मध्यमान समान है। अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 66.2 तथा 66.23 है और टी अनुपात मान भी इन दोनो के अन्तर को सार्थक प्रमाणित नहीं करता। इससे स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रायें पढ़ने की दृष्टि से समान होती हैं। दोनों समूहों की शैक्षिक निष्पत्ति सामान्य स्तर की पायी गई यदि इन्हें विशेष प्रकार का पाठ्यक्रम विशिष्ट प्रकार की शिक्षण विधियों से पढ़ाया जाय तथा विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप, प्रतियोगिताएं एव सही निर्देशन दिया जाय तो इनकी शैक्षिक उपलब्धि को उच्चस्तरीय बनाया जा सकता है।

उपरोक्त परिणामो का दण्डरेखीय चित्र निम्न प्रकार है –

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

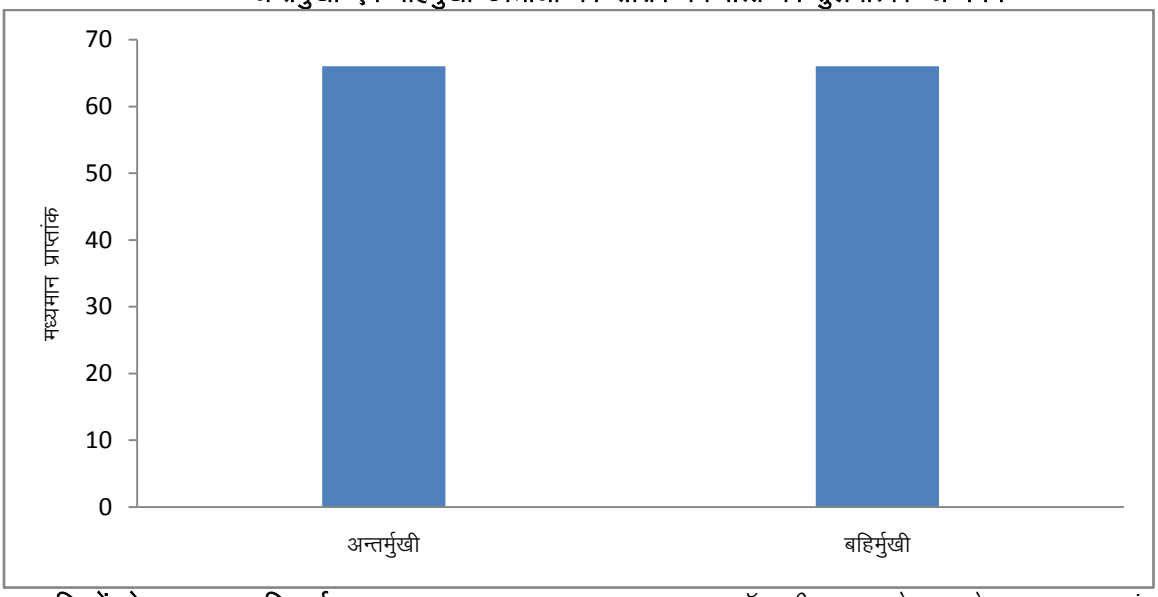

उपलब्धियों के आधार पर निष्कर्ष

अध्ययन की उपलब्धियों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि –

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान क्रमशः 66.2, 66.23 समान है तथा मानक विचलन 4.73, 5.72 है जो यह सूचित करता है कि अन्तर्मुखी की तुलना में बहिर्मुखी अधिक प्रसरित है।

अतः सांख्यिकीय दृष्टि से अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं जो इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रायें पढ़ने की दृष्टि से लगभग समान होती हैं अर्थात् कहा जा सकता है, कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ऑगस्टीन एडजेइ, सैमुअल डॉन्टोह एवं फ्रांसिस बोटेंग (2018)" आफिनसों कॉलेज ऑफ एजुकेशन के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी शिक्षक प्रशिक्षुओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन" रिसर्च एनालाइसेस जरनल ऑफ अप्लाईड रिसर्च, वोल्यूम – 04, अंक–08, पृष्ठ 1916–1932।*
2. *ए. एस. अरूल लॉरेन्स एवं ए. जॉन लॉरेन्स (2014)" सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रकार एवं शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन" इण्डियन ई–जरनल ऑन टीचर एजुकेशन, वोल्यूम – 02, अंक–03, पृष्ठ 26–34।*
3. *सी.वी., आशा (1980) :"माध्यमिक विद्यालय के बच्चों में सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन" के. एफ. बी. रिहेवलिटेशन सेन्टर कालीकट (केरल) एशियन जनरल ऑफ साइकॉलोजीकल एण्ड एजूकेशन, वोल्यूम –6, पृष्ठ 1–4।*
4. *फहद राधी अल हरबी (2017)" शैक्षिक सम्प्राप्ति पर अन्तर्मुखता का प्रभावः एक क्रास–अनुभागीय अध्ययन" इन्टरनेशनल जरनल ऑफ साइन्टिफिक एण्ड इंजीनियरिंग रिसर्च, वोल्यूम – 08, अंक–07, पृष्ठ 1136–1137।*
5. *माथुर, एस. एस. (1981) :"शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
6. *राय, पारसनाथ (1977) :"अनुसधान परिचय" शिक्षा सम्बन्धी प्रकाशन।*
7. *सलीन बिनती रबाई (2014)" टेक्नोलोजी एवं वोकेशनल ऐजुकेशन के शिक्षक प्रशिक्षुक विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति पर व्यक्तित्व का प्रभाव का अध्ययन" डेवलेपिंग कन्ट्री स्टडीज, वोल्यूम –04, अंक–16, पृष्ठ 60–65।*
8. *स्वामी, बी. कुप्पू (1976) : "बाल व्यवहार और विकास" विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लि., दिल्ली।*